Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.08, March, 2024**

An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

Knowledgeable Research

ISSN 2583-6633

Vol.02, No.08, March, 2024

http://knowledgeableresearch.com/

मांगलिक अवसरों पर बनने वाली उत्तर प्रदेश की लोक कला "चौक पूरना "एक परिचय

अर्चना गर्ग

असिस्टेंट प्रोफेसर,चित्रकला विभाग, स्वामी शुकदेवानंद कॉलेज,शाहजहांपुर

Email: arc.garg10@gmail.com

****

शोध संदर्भ: - *भारत की सांस्कृतिक विरासत को पुष्ट करने वाली, अनेक धर्मो एवं संस्कृतियों की केंद्रस्थली, राम और कृष्ण की जन्मभूमि, उत्तर प्रदेश आज भी अपनी पुरातन संस्कृति को जीवित रखे हुए हैं। भारतीय संस्कृति एवं कला के विकास में गंगा- यमुना के इस क्षेत्र में विभिन्न लोक कलाएं फली फूली। उत्तर प्रदेश में मांगलिक अवसरों पर लोककला (चौकपूरना) का निर्माण विशेष रूप से किया जाता है। इसके बनाने का उद्देश्य देवी-देवता का आवहन कर उन्हे आसन प्रदान करना होता है । पूजास्थल पर बनाई जाने वाली वेदी में सूखे आटे के प्रयोग से भूपृष्ठ पर ज्यामितीय आकृतियां बनाई जाती है इसे चौक कहते हैं इसे धूलि चित्र भी कहते हैं। इसके साथ ही सुख-समृद्धि, सौन्दर्य व शुभता के लिए बनाया जाता है यहाँ अवसर विशेष, उत्सव, अनुष्ठान, संस्कार, पर्व से सम्बंधित व उससे जुड़े प्रतीकों का अंकन किया जाता है। मानव की भावनाओं से इस लोककला का सीधा सम्बन्ध रहा है इसलिए परम्परागत रूप से बनती चली आ रही है। प्रस्तुत शोध पत्र मांगलिक अवसर पर बनने वाली उत्तर प्रदेश की लोक कला "चौक पूरना" के विशेष संदर्भ में है।*

शब्द बीज: *लोक कला, चौक पूरना, मांगलिक चिह्न, परंपरा, प्रतीक*

****

प्रस्तावना:

लोक कला जनमानस की कला है और उसे ही प्रतिबिम्बित करती है। लोक कला से हमारा स्वाभाविक अपनत्व होता है उसकी रचना के लिए हमें तरह-तरह की कला विधाओं की खोज नहीं करनी पड़ती । आसानी से जो प्राप्त हो जाता है उसी से स्त्रियां विभिन्न तीज त्योहार अथवा विभिन्न मांगलिक अवसरों पर सपाट रंगों और सरल रेखाओं द्वारा पूरा चित्र एक कहानी के रूप में लिख डालती है। लोक कलाकार कला का ज्ञान पुरानी पीढ़ी से दिन प्रतिदिन बनने वाले घर आंगन के चित्रों को देखकर करता है। "चौक पूरना भारत में एक महत्वपूर्ण भूमि लोक चित्रण परंपरा है जिसे विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है जैसे महाराष्ट्र में रंगोली ,उत्तर प्रदेश में चौक पूरना, अल्मोड़ा तथा गढ़वाल में आपना, बिहार में अहपन और बंगाल में अल्पना कहा जाता है।"

"1" उत्तर प्रदेश में चौक पूरने का विशेष महत्व है। मांगलिक अवसरों पर घर तथा पूजा स्थल को गोबर से लीपकर चौक पूरी जाती है । विवाह, हवन पूजन, कथा ,व्रत ,अतिथि सत्कार , बच्चे के जन्म के छटवे दिन छठी संस्कार के अवसर पर चौक पूरने का विधान मिलता है। मूलतः इनके आकार त्रिकोण, चतुष्कोण, पंचकोणीय , षष्टकोण अष्टकोणीय,षोडशदल,नौ

Author Name: अर्चना गर्ग

Received Date: 12.03.2024

Publication Date: 23.03.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.08, March, 2024**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

खण्डीय, कमल आकार, कमल पत्ती आकार, कमल कली आकार, वृत्त ,शंखाकार आदि होते हैं। "शुभ कार्यों में हल्दी, सूखे आटे, रोली, गेरू , चूना आदि से त्रिभुजाकार, षटकोण , आयताकार, गोलाकार चौक पूरी जाती है।"

"2" चौक जिस स्थान पर रखी जाती है सर्वप्रथम उसे स्थान को धोकर गाय के गोबर से लीप कर शुद्ध कर लिया जाता है।चौक पूरने का स्थान आंगन, देहरी, चबूतरा, द्वार मुख्य द्वार, देवस्थान ,संस्कार स्थल, हवन -यज्ञ स्थल ,पूजन- पाठ स्थल, विवाह स्थल, रस्म रिवाज स्थल आदि होते हैं।चौक में स्वास्तिक, चरण, कलश, कमल, शंख,सूर्य ,चंद्र ,सप्त कमल अष्ट कमल आदि प्रतीक बनाए जाते हैं जो दार्शनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है जैसे कलश को शरीर व उसमें भरा जल जीवन रस का प्रतीक है तथा लक्ष्मी से भी संबंध माना जाता है। किसी भी शुभ अवसर पर कलश स्थापना अवश्य की जाती है यह मंगल का प्रतीक माना जाता है।"इस चौक में बिंदु , स्वास्तिक, चतुष्कोण ,त्रिकोण ,पूर्ण कुंभ, त्रिशूल, आड़ी और खड़ी रेखाओं का प्रयोग किया जाता है सर्वप्रथम भूमि को साफ करके गोबर या गेरू से लीपा जाता है या कभी-कभी लोग भूमि को पानी से धोकर ऐसे ही चौक पूरते हैं।"

"3" विभिन्न मांगलिक अवसरों पर चौक पूरना शुभ माना गया है जिसे गेरू, सूखा आटा (गेहूं व चावल), हल्दी, अहपन (पीसे हुए चावल का घोल), फूलों, गाय के गोबर आदि के माध्यम से बनाते है। सूखे माध्यम से यह अनामिका, मध्यमा,तर्जनी एवं अंगूठे से चुटकी भरकर, बुरक बुरक कर बनाई जाती है तथा आर्द माध्यम ऐपन या गेरू से कपड़े के टुकड़े से उंगलियों के सहारे चूआ-चूआ कर बनाई जाती है और अनाज द्वारा मुट्ठी में भरकर निश्चित प्रतीको व चिह्नो में भर भर कर तैयार की जाती है । चौक मूलतः रेखा व बिंदु प्रधान होती है। "इन चित्रों की रेखाओं में सुधराई और बारीकी की अपेक्षा भावना की प्रधानता होती है । उनमें सादापन और धार्मिक पवित्रता का भाव होता है"।

"4" भारतीय परम्परा के अनुसार किसी भी मांगलिक कार्य को आरम्भ करने से पूर्व श्री गणेश जी की पूजा अनिवार्य रूप से की जाती है तदुपरांत् अन्य देवी-देवता की पूजा की जाती है जिससे मांगलिक कार्य बिना किसी विघ्न के सपन्न हो जाए।

Author Name: अर्चना गर्ग
Received Date: 12.03.2024
Publication Date: 23.03.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.08, March, 2024**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

विभिन्न मांगलिक अवसरों पर चौक पूरने का रिवाज है इन चौक पूरनों में मांगलिक चौक, कल्याणकारी चौक, संस्कार चौक, व्रत त्योहार चौक अनिवार्य रूप से बनाते हैं जिसे गेरू, सूखा आटा (गेहूं व चावल), हल्दी, अहपन (पीसे हुए चावल का घोल), फूलों, गाय के गोबर आदि के माध्यम से बनातेहैं। चौक के ऊपर ही पाटा (पीढ़ा) के ऊपर कलश स्थापना व देवप्रतिमा को स्थापित किया जाता है तथा देवोत्थान एकादशी पर भी विष्णु जी से सम्बंधित विशेष चौक पूरकर ही उन्हे जगाया जाता है और तभी से मांगलिक कार्य प्रारम्भ हो जाते हैं।

हिन्दू धर्मानुसार सोलह संस्कार होते है जो जन्म से ही आरम्भ हो जाते हैं लगभग सभी संस्कारों में चौक पूरने का विधान दिखाई देता है। "जन्म के समय दीवार पर शक्ति के देवताओं को अंकित कर दिया जाता है परिवारजनो के विश्वास के अनुसार देवता जच्चा व बच्चा दोनों की रक्षा आदि करते हैं।

"5" छठी (जन्म के छठे के दिन) के अवसर पर आटे का चौक बनाते हैं, अन्नप्राशन एवं पाटी पूजन में देव-स्थान पर चौक बनाए जाते है। उपनयन संस्कारों में चौक में ओम, स्वास्तिक, श्री आदि प्रतीकों से चतुष्कोण चौक का निर्माण किया जाता है। ओउम, वेद आरम्भ, संस्कार, स्वास्तिक चौक में उपनयन संस्कार और श्री चौक पर समावर्तन संस्कार किये जाते हैं।"

“6” हिन्दू धर्म में अनेक त्योहार व व्रत मनाएं जाने की परम्परा है और इन अवसरों पर चौक पूरने की परम्परा हैं। चौक नवरात्री में कलश स्थापना हेतु, नाग पंचमी (गुड़िया) में , रक्षाबन्धन में , हरतालिका तीज में , गणेश चतुर्थी में श्री गणेश के आगमन हेतु, करवा चौथ में ,अहोई अष्टमी में अहोई माँ के पूजन हेतु, दीपावली में माँ लक्ष्मी के आगमन हेतु, गोवर्धन में गोवर्धनधारी के पूजन हेतु, भईया दूज में भाई के लम्बी उम्र के अनुष्ठान हेतु आदि त्योहारों पर भिन्न-भिन्न व्रत चौक बनाई जाती है, जिसे आटा, हल्दी, रोली, गेरू, गोबर आदि से निर्मित किया जाता है।

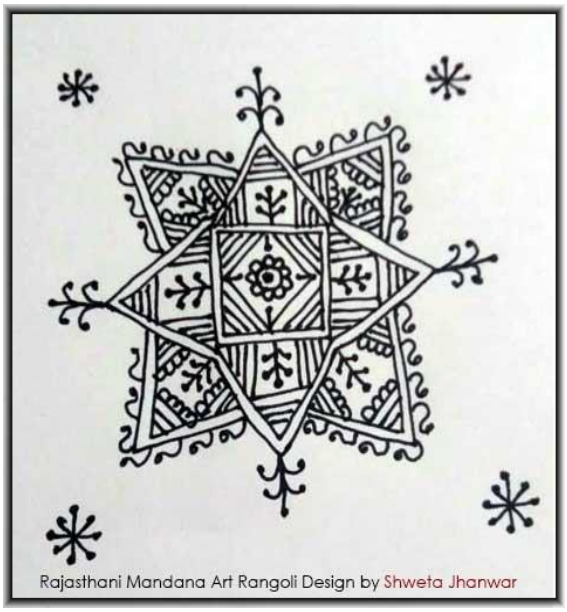

Author Name: अर्चना गर्ग
Received Date: 12.03.2024
Publication Date: 23.03.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.08, March, 2024**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

मांगलिक अवसरों जैसे विवाह, गृहप्रवेश, वर्षगांठ, छठी आदि पर मांगलिक चौक पूरा जाता है। विवाह में सगाई, तिलक, द्वार-पूजा, मण्डप आदि में सूखे आटे व हल्दी से चौक पूरते हैं।गृहप्रवेश, वर्षगांठ, जन्मदिन के अवसरों पर पाटा पर कलश स्थापित करने हेतु भूमि को गोबर से लीपकर, स्वच्छ व साफ करके भूमि पर अलंकरण किया जाता है

देवी-देवता को आसन देने के लिए कल्याणकारी चौक बनाया जाता है जैसे- किसी विशेष अनुष्ठान, सत्यनारायण की कथा, श्रीमद् भागवत कथा, अखण्ड रामायण पाठ व अन्य विशेष पूजा-पाठों में पूजा स्थल पर चौक का निर्माण किया जाता है इसके साथ ही इन अनुष्ठानों में कलश स्थापना, नवग्रह पूजन, अखण्ड दीप प्रज्वलित, यज्ञ वेदी को सजाने हेतु भी चौक पूरा जाता है।रामचरितमानस में चौक पूरने का अनेक स्थानों पर वर्णन आया है। "रचहु मंजु मनि चौके चारु । कहहु बनावन वेगि बजारू।।"

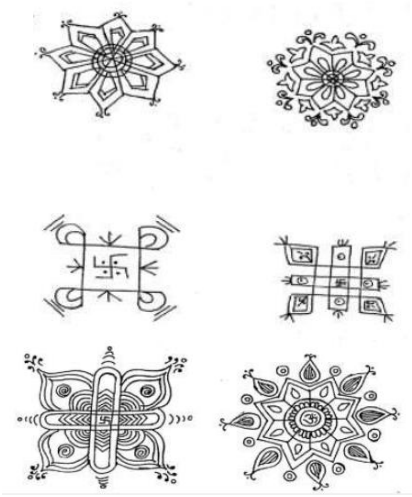

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि लोक कला हमारे सामाजिक जीवन के हर एक पहलू में देखी जा सकती है हमारे जितने भी सामाजिक उत्सव है उन सब में लोक कला किसी न किसी रूप में दिखाई देती है। लोक कला विषय की दृष्टि से व्यापक है। धार्मिक आकृतियों के साथ-साथ दैनिक जीवन की विविधता अलंकार आदि का प्रयोग लोक कला में बड़े पैमाने पर होता है।

चौक पूरने में ज्यामितीय रूपों का अपना महत्व है इसमें निर्मित शुभ और मांगलिक चिह्नो के गूढ अर्थ होते हैं। भूमि अलंकरण का यह रूप चौक पूरना मानव जीवन में सकारात्मक ऊर्जा के स्वरूप को विस्तारित करता है एवं इसकी कलात्मक शैली में विविध प्रकार की रेखाएं व्यक्ति के जीवन के सुख-दुख के स्वरूप को अभिव्यक्त करती हैं। चौक कर्तव्यों के प्रति सचेतक की भूमिका में सदैव सक्रिय होने का संदेश देता है।उत्तर प्रदेश की लोक कला चौक पूरना का महत्व यहां के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग है।

Author Name: अर्चना गर्ग
Received Date: 12.03.2024
Publication Date: 23.03.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.08, March, 2024**

An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

संदर्भ सूची

1. ए जेंटली,कलाओं का मानस मंथन (2012) पृष्ठ- 52
2. जय प्रकाश राय, योगेंद्र प्रताप सिंह ,उत्तर प्रदेश क्षेत्र की लोक संस्कृति (1999) पृष्ठ -55
3.डॉ०बिमला वर्मा ,उत्तर प्रदेश की लोक कला (1987) पृष्ठ 24- 25
4.वाचस्पति गैरोला भारतीय चित्रकला (1990) पृष्ठ -248
5.सरल बिहारी लाल सक्सेना कल सिद्धांत और परंपरा (1993) पृष्ठ 71-73
6. हृदय गुप्त, स्वदेशी कला (2018) पृष्ठ- 5
7. रामचरितमानस अयोध्या कांड 6 /7

Author Name: अर्चना गर्ग

Received Date: 12.03.2024
Publication Date: 23.03.2024